Gupta period (Part -12)

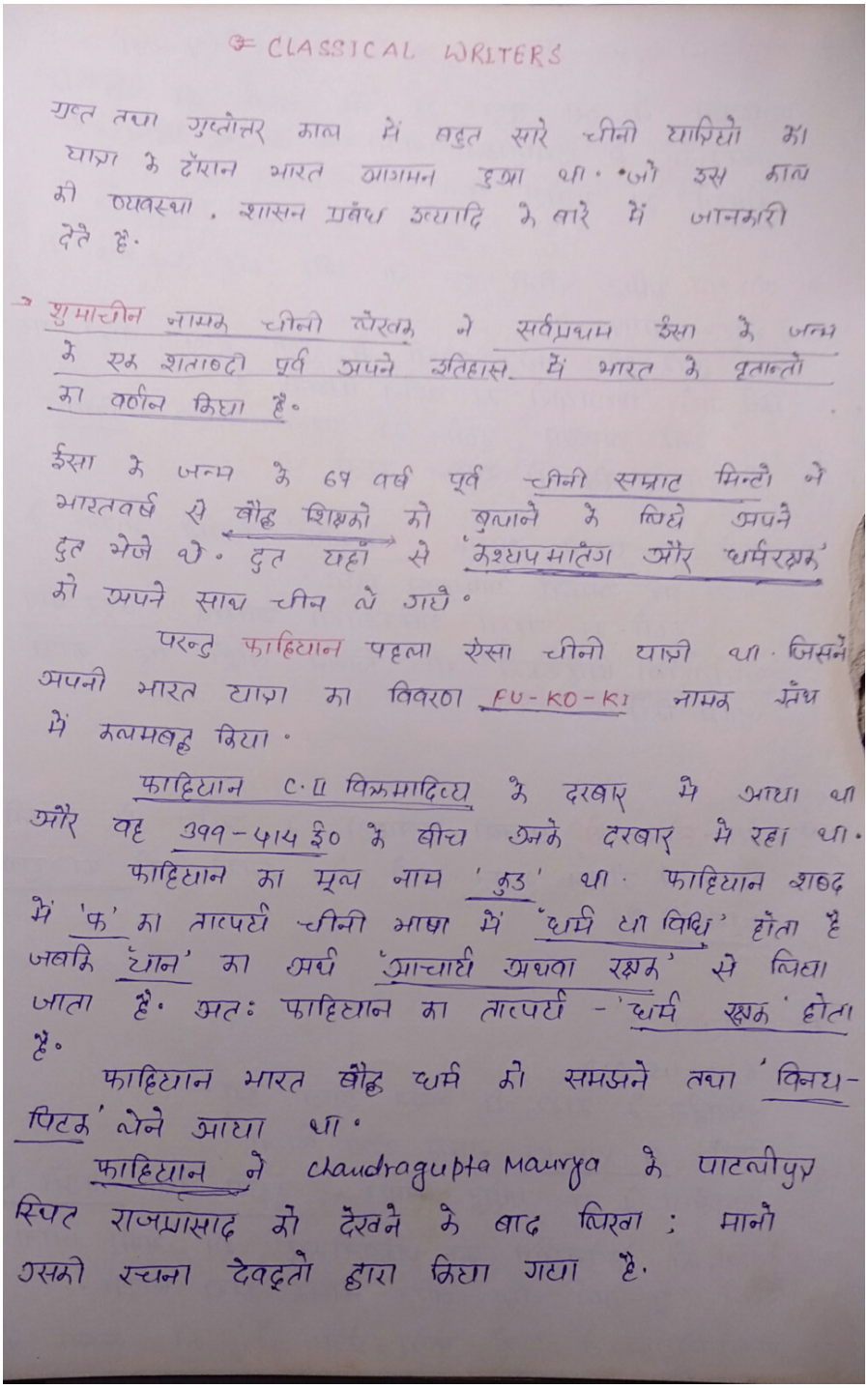

CLASSICAL WRITERS

गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल में बहुत सारे चीनी यात्रियों का यात्रा के दौरान भारत आगमन हुआ था। जो इस काल की व्यवस्था, शासन प्रबंध इत्यादि के बारे में जानकारी देते है।

→ सुमाचीन नामक चीनी इतिहास ने सर्वप्रथम ईसा के जन्म के एक शताब्दी पूर्व अपने इतिहास में भारत के वृतान्तों का वर्णन किया है।

ईसा के जन्म के 64 वर्ष पूर्व चीनी सम्राट मिन्टो ने भारतवर्ष से बौद्ध शिक्षकों को बुलाने के लिये अपने दुत भेजे थे। दुत यहाँ से 'कश्यपमातंग और धर्मरक्षम' को अपने साथ चीन ले गये।

परन्तु फाहियान पहला ऐसा चीनी यात्री था जिसने अपनी भारत यात्रा का विवरण FU-KO-KI नामक ग्रंथ में कलमबद्ध किया।

फाहियान C.II विक्रमादित्य के दरबार में आया था और वह 399-414 ई० के बीच उनके दरबार में रहा था।

फाहियान का मूल नाम 'कुंग' था। फाहियान शब्द में 'फ' का तात्पर्य चीनी भाषा में 'धर्म या विधि' होता है जबकि 'यान' का अर्थ 'आचार्य अथवा रक्षम' से लिया जाता है। अतः फाहियान का तात्पर्य - 'धर्म रक्षम' होता है।

फाहियान भारत बौद्ध धर्म को समझने तथा 'विनय-पिटक' लेने आया था।

फाहियान ने Chandragupta Maurya के पाटलीपुत्र स्थित राजप्रासाद को देखने के बाद लिखा : मानो उसकी रचना देवदूतों द्वारा किया गया है।

फाहियान ने इस बात की भी चर्चा की थी कि गुप्तकाल में दिनानुदिन जीवन के आदान प्रदान में 'कौड़ियों' का प्रयोग होता था।

- सुंग युन प्रसिद्ध चीनी दूत था और यह 520 A.D. में भारत आया था।

इनके द्वारा रचित ग्रंथों में हूणों द्वारा बौद्धों पर किये गये अत्याचारों का वर्णन मिलता है।

इनके अनुसार, हूणों का पहला शासक 'तिगीन' जो गांधार क्षेत्र में शासन करता था।

- हूणों का पहला शासक 'तोरमाण', जिसने भारत के अन्दर तक अपना अभियान किया।

हूणों का पहला शक्तिशाली शासक कट्टर शैव धर्मावलंबी 'मिहिरकुल' था। जिसने बौद्धों पर काफी जुल्म किये।

- वांग-ह्वेन-त्से सातवीं शताब्दी के आरंभ में अपनी यात्रा के दौरान भारत आये थे। इनकी कृति 'फा-युवान-चुलीन' है।

- ह्वेनसांग

629-45 A.D.

हर्षवर्द्धन के काल में भारत आया था।

इन्होंने Si-YU-KI नामक ग्रंथ लिखा।

ह्वेनसांग के दो प्रसिद्ध शिष्य - हुइली तथा ताओ सियान

हुईली को 'ह्वेनसांग का जीवनीकार' भी माना जाता है इसने 'यू-वान-चांग-चरित' नामक ग्रंथ लिखा।

ताओ सियान ने 'से-किया-फ्रेंग-चे' की रचना की।